अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली । सोमवार, 1 अप्रैल 2019

नेतृत्व सिर्फ अगले चुनाव के बारे में नहीं सोचता, वह अगली पीढ़ी के बारे में सोचता है ...
- साइमन सिनेक

ब्रिटिश-अमेरिकी लेखक

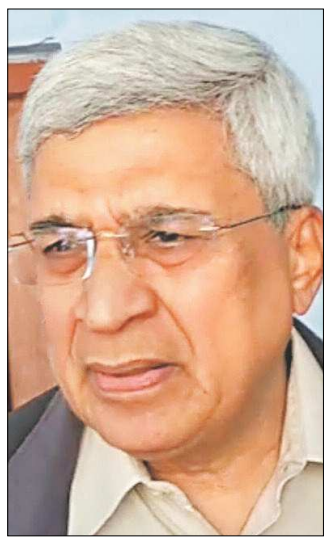

केरल के वायनाड से भी राहुल गांधी के चुनाव लड़ने के फैसले पर माकपा की नाराजगी कांग्रेस और वाम मोर्चे के बीच विवाद की सार्वजनिक अभिव्यक्ति तो है ही, इससे एनडीए-विरोधी गठजोड़ के बारे में भी कोई अच्छी छवि नहीं बनती।

बिखरा हुआ विपक्ष

लोकसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए से मुकाबले के लिए पूरे विपक्ष का एकजुट होना तो दूर, समानधर्मा पार्टियों के बीच भी विविध वजहों से जिस तरह दूरी पैदा हुई है, वह देखने लायक है। राहुल गांधी के अमेठी के अलावा उत्तरी केरल के वायनाड से भी चुनाव लड़ने की घोषणा पर माकपा की प्रतिक्रिया इसी का सुबूत है। 2009 के परिसीमन से वजूद में आई वायनाड सीट पर दो चुनावों से कांग्रेस का कब्जा है। इस कारण इसे राहुल गांधी के लिए सुरक्षित सीट बताया जा रहा है, पर इस फैसले के जरिये कांग्रेस ने दक्षिण भारत में खुद को मजबूत करने का संकेत दिया है। लेकिन मुद्दा यह नहीं है। मुद्दा यह है कि कांग्रेस अध्यक्ष के वायनाड से खड़े होने से माकपा नाराज है, क्योंकि एलडीएफ की तरफ से वहां भाकपा का प्रत्याशी खड़ा होगा। केरल की राजनीति में कांग्रेस और वाम पार्टियां भले प्रतिद्वंद्वी हों, पर राष्ट्रीय राजनीति में वे प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं। लेकिन प्रकाश करात का कहना है कि राहुल केरल में माकपा को खत्म करने के लिए वायनाड से खड़े हो रहे हैं, नहीं तो वह किसी ऐसी सीट से लड़ सकते थे, जहां भाजपा मुकाबले में हो। वाम दल शुरू से कांग्रेस के साथ रहे हैं और कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए-1 सरकार के एकाधिक महत्वपूर्ण जनहितकारी फैसलों का श्रेय बाहर से समर्थन दे रहे वाम मोर्चे को जाता था। पर अब भाजपा-विरोधी गठबंधन में भी वाम पार्टियों की जगह नहीं है। थोड़े दिनों पहले बिहार की बेगूसराय सीट पर राजद की आपत्ति के कारण भाकपा प्रत्याशी कन्हैया कुमार को गठबंधन का प्रत्याशी नहीं बनाया गया। यह प्रकारांतर से वाम दलों की छीजती जगह का भी सुबूत है। ऐसे ही, लंबी माथापच्ची के बाद कांग्रेस ने दिल्ली में आप के साथ गठजोड़ न करने का जो संकेत दिया है, वह भी एनडीए-विरोधी मोर्चे के लिए अच्छी बात नहीं। हालांकि दिल्ली में जिस आप ने कांग्रेस को हराकर सत्ता हासिल की थी, लोकसभा चुनाव में उसी से गठजोड़ करना व्यावहारिक नहीं है। लेकिन एनडीए-विरोधी मोर्चे के लिए यह लाभदायी होता, शायद इसीलिए कांग्रेस के भीतर से भी गठजोड़ के पक्ष में आवाजें उठ रही थीं। चुनावी नतीजा चाहे जो हो, पर फिलहाल एनडीए के सहयोगी दलों की एका के विपरीत विपक्षी खेमे में अलगाव और असहमति की भावना कोई अच्छी छवि पेश नहीं करती।

तमिल सियासत के पेच

तमिलनाडु में द्रमुक और अन्नाद्रमुक के अलावा इस बार कई पार्टियां मैदान में हैं। इसी कारण अन्नाद्रमुक के खिलाफ माहौल के बावजूद द्रमुक को लाभ मिलता नहीं दिखता, फिर मतदाताओं के पास विकल्प भी अधिक हैं।

एम भास्कर साई, वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय राजनीति में भाजपा और कांग्रेस बड़ी पार्टी हो सकती हैं, पर जब तमिलनाडु की सियासत की बात करते हैं, तब ये दोनों पार्टियां हमेशा क्षेत्रीय द्रविड़ दिग्गजों-अन्नाद्रमुक और द्रमुक पर निर्भर रहती हैं। अगर कोई आगामी चुनाव के लिए हुए गठबंधन पर नजर डालेगा, तो पाएगा कि यह प्रवृत्ति जयललिता और करुणानिधि के युग से लेकर उनके निधन के बाद भी जारी है। राज्य में दो बड़े गठबंधनों का गठन हो चुका है, जिनमें से एक का नेतृत्व अन्नाद्रमुक कर रही है, तो दूसरे का द्रमुक। चालीस सीटों (तमिलनाडु की 39 और पड़ोसी केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी की एक) में से दोनों पार्टियों-अन्नाद्रमुक और द्रमुक ने अपने पास बीस-बीस सीटें रख ली हैं और बाकी सीटें सहयोगियों में बांट दी हैं।

अन्नाद्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन में रामदौस की पीएमके सात सीटों (एक राज्यसभा की सीट का भी प्रस्ताव दिया गया है) पर चुनाव लड़ रही है, भाजपा पांच पर, अभिनेता से राजनेता बने विजयकांत की डीएमडीके चार पर, पूर्व कांग्रेसी नेता जीके वासन की टीएमसी, डॉ. कृष्णासामी की पीटी, एसी शनमुघम की एनजेपी और पुडुचेरी में एनआर कांग्रेस एक-एक सीट पर चुनाव लड़ेगी। ऐसे ही द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन में कांग्रेस दस सीटों पर चुनाव लड़ रही है, जबकि विदुथलई चिरुथइगल काची, माकपा और भाकपा में से प्रत्येक को दो-दो सीटें दी गई हैं। इसके अलावा वाइको के एमडीएमके, आईजेके, आईयूएमएल और केडीएमके को एक-एक सीट दी गई है। द्रमुक ने एमडीएमके को राज्यसभा की एक सीट देने का भी वादा किया है।

दिलचस्प बात यह है कि राज्य में पहली बार लोकसभा चुनाव के साथ ही 18 अप्रैल को तमिलनाडु में एक मिनी विधानसभा चुनाव (18 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव) भी होना है। अन्नाद्रमुक को सत्ता में बने रहने के लिए और आठ वर्षों से सत्ता से बाहर द्रमुक को अन्नाद्रमुक को सत्ता से बेदखल करने के लिए इनमें से अधिकाधिक सीटें जीतने की जरूरत है।

हालांकि पहले की ही तरह मुख्य मुकाबला अन्नाद्रमुक और द्रमुक के बीच है, लेकिन इस बार दो उल्लेखनीय और नए खिलाड़ी भी उभरे हैं। वे हैं दिनाकरन की एएमएमके और अभिनेता कमल हासन की एमएनएम। उम्मीद है कि ये दोनों पार्टियां उन्हीं वोटों में सेंध लगाएंगी, जो या तो द्रमुक, या अन्नाद्रमुक या उनके गठबंधन सहयोगियों को दिए जाएंगे। इसके अलावा इस दौड़ में फिल्म निर्माता से राजनेता बने सीमान की नाम तमीझर काची भी हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अन्नाद्रमुक और द्रमुक का पारंपरिक वोट बैंक बरकरार रहेगा, लेकिन तटस्थ और युवा मतदाता, जिनका वोट इन पार्टियों में से एक की हार-जीत का फैसला करेगा, कमल, दिनाकरन या सीमान को वोट दे सकते हैं। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि दिनाकरन ने अन्नाद्रमुक के उन समर्थकों को आकर्षित किया है, जो पार्टी के मौजूदा नेतृत्व (मुख्यमंत्री पलानीस्वामी और उप मुख्यमंत्री ओ पन्नीरसेलवम) से निराश हैं। कमल हासन ने युवाओं, महिलाओं और पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं से अपने भावनात्मक संबंध जोड़े हैं। ऐसे ही सीमान को उन युवाओं का समर्थन प्राप्त है, जो तमिल समर्थक मानसिकता के हैं। अब तक मतदाताओं के पास अन्नाद्रमुक या द्रमुक के अलावा और ज्यादा विकल्प नहीं थे, लेकिन इस बार उनके पास आकर्षक विकल्प हैं।

वर्ष 2004 का लोकसभा चुनाव, जिसमें द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन ने राज्य में विपक्षी पार्टियों का सूपड़ा साफ कर दिया था और 2014 का लोकसभा चुनाव, जिसमें अन्नाद्रमुक अकेले लोकसभा की 37 सीटें जीतकर देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी, की तरह इस बार कोई लहर नहीं है। इसलिए इस बार वोटों का बंटवारा होगा। और इसमें दिनकरन, कमल और सीमान की भूमिका प्रमुख होगी। हो सकता है, वे न जीतें, लेकिन खेल खराब कर सकते हैं। इसकी चुभन द्रमुक या अन्नाद्रमुक को साफ महसूस होगी। जाहिर-सी बात है कि जो लोग अन्नाद्रमुक और भाजपा से निराश हैं, वे इस बार सिर्फ द्रमुक गठबंधन को ही वोट नहीं देंगे। उनका वोट दिनाकरन और कमल के बीच भी बंट सकता है। इसलिए इसका फायदा द्रमुक को नहीं होने वाला। इसके बजाय वोट बंटने से अन्नाद्रमुक को ही फायदा होगा। इसी तरह, जो लोग द्रमुक और कांग्रेस से निराश हैं, वे अन्नाद्रमुक को ही वोट नहीं देंगे, बल्कि वे एमएनएम और एएमएमके को भी वोट दे सकते हैं।

कुछ जनमत सर्वेक्षणों में द्रमुक-कांग्रेस गठबंधन की, तो कुछ में अन्नाद्रमुक-भाजपा गठबंधन की जीत की भविष्यवाणी की गई है, इसलिए दोनों खेमे आशावादी लग रहे हैं। पिछले एक हफ्ते से ज्यादा समय से पूरे राज्य का दौरा कर रहे मुख्यमंत्री पलानीस्वामी कहते हैं कि द्रमुक और कांग्रेस भ्रष्ट है, जबकि अन्नाद्रमुक और भाजपा लोगों की सेवा कर रही हैं। राष्ट्र को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे एक मजबूत नेतृत्व की जरूरत है और वह सत्ता में वापसी करेंगे। दूसरी ओर, द्रमुक अध्यक्ष एम के स्टालिन मुख्यमंत्री के दावे को खारिज करते हुए कहते हैं कि लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि असली भ्रष्ट कौन है। तमिलनाडु कभी भी सांप्रदायिक ताकतों के पक्ष में नहीं रहा है। इस बार भी मतदाता इसे साबित करेंगे और हमारे धर्मनिरपेक्ष गठबंधन के लिए मतदान करेंगे। वहीं कमल हासन का दावा है कि हम द्रमुक और अन्नाद्रमुक का सही विकल्प हैं। इन दोनों ने दशकों से सत्ता में रहने के बावजूद राज्य के लिए कुछ नहीं किया। लेकिन हम अपने वादे पूरे करेंगे और उन्हें हकीकत में बदलेंगे।

आने वाले दिनों में यह चुनावी लड़ाई और तेज होगी। यह चुनाव स्टालिन, पलानीस्वामी और पन्नीरसेलवम का राजनीतिक भविष्य तय करेगा, जो अपनी पार्टियों के बड़े और करिश्माई नेताओं की अनुपस्थिति में चुनावी समर का सामना कर रहे हैं। इनके अलावा कमल हासन, दिनाकरन और सीमान जैसे नए खिलाड़ियों का भी भविष्य इस चुनाव से तय होगा।

अंतर्ध्वनि

>> प्रेमशंकर मिश्र

कविता और संगीत के वातावरण में मैंने आंखें खोली हैं

आज कविता का कोई मानक, कोई अनुशासन या कोई शास्त्र नहीं रह गया है मेरे देखने में। कविता आज सिद्धि न रहकर अपनी-अपनी अन्यान्य सिद्धियों विशेष की साधिका मात्र है। एक खेमे की कविता दूसरे खेमे के लिए कूड़ा घोषित हो रही है। संतुष्ट इसलिए हूं कि मैंने कभी भी प्रचलित अर्थों में कवि होने का भ्रम नहीं पाला है।

मेरे तईं ये काव्य पंक्तियां समय-समय पर मेरी निजी जरूरतों की उपज रही हैं। थोड़ा और साफ करूं, मैं हमेशा से स्थितियों को सहता और समझौता करता रहा हूं। फिर भी कुछ असहनीय स्थितियों से उबरने के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप ऐसी पंक्तियां बरबस निकलती हैं।

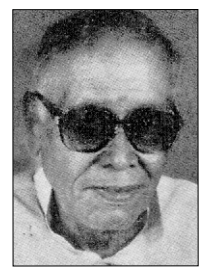

बड़े-छोटे साहित्यमर्मज्ञों की सहानुभूति, प्यार और दुलार मुझे इस सीमा तक प्राप्त है कि मेरे ऊपर कृपा करके वे दो शब्द कह भी सकते थे, पर जानबूझकर अपने और अपने पाठक के बीच किसी ऐसे महारथी को भूमिका लेखक के रूप में लाना उचित नहीं लगा, जो आपकी दृष्टि पर अपना चश्मा पिन्हा दे। जिंदगी के साथ अपनी काव्य साधना का भी ग्राफ बहुत टेढ़ा-मेढ़ा रहा है। कई-कई बार उनके तार टूटते-जुड़ते रहे हैं। एक अत्यंत उत्कृष्ट और उदार कविता और संगीत के वातावरण में मैंने आंखें खोली हैं। मेरे पूज्य पिताश्री पं. बलराम प्रसाद मिश्र 'द्विजेश' के कारण उन दिनों देश के जाने-माने दिग्गज कवि-कलावंत महीनों मेरे यहां ठहरते थे। सुबह-शाम अखंड काव्य और संगीत गोष्ठियां हुआ करती थीं। जगन्नाथदास 'रत्नाकर', हरिऔध, पं. रमा शंकर शुक्ल 'रसाल' के अतिरिक्त रीवां के महाकवि 'ब्रजेश', पं. बालदत्त, यज्ञराज, विचित्र मित्र ऐसे आचार्य कवि, अजीम खां, झंडे खां ऐसे उस्ताद, इनायत खां ऐसे सितारवादक, उनके पुत्र उस्ताद अजीम खां साहब ऐसे संगीतज्ञों की सन्निधि मुझे बचपन से प्राप्त हुई है।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

न भाजपा, न कांग्रेस

उत्तर प्रदेश में मुस्लिमों का वोट इस बार भाजपा को नहीं जाएगा। मुसलमानों में गहरी मायूसी है, क्योंकि उनको अब दिखने लगा है कि कांग्रेस की धर्मनिरपेक्षता भी खोटी है। प्रियंका गांधी पिछले दिनों वाराणसी गई थीं, जहां उनके हाथ में आरती की थाली थी।

तवलीन सिंह

गांव में दाखिल होते ही मस्जिद दिखी। गांव उत्तर प्रदेश में था, लेकिन मैं उसका नाम बताने की आवश्यकता नहीं समझती, क्योंकि मस्जिद के बाहर बैठे बुजुर्ग मुसलमानों से मैंने जो बातें सुनीं, इन दिनों वैसी बातें हर मुस्लिम बस्ती में सुनने को मिलती हैं।

उत्तर प्रदेश में इस तरह की बातें मुसलमान ज्यादा करते हैं, क्योंकि इस राज्य के मुख्यमंत्री भगवाधारी महंत हैं, जिनकी राजनीतिक यात्रा राम जन्मभूमि आंदोलन से शुरू हुई थी। उत्तर प्रदेश में सत्ता संभालते ही योगी आदित्यनाथ ने ऐसे निर्णय लिए हैं, ऐसी नीतियां बनाई हैं, जिनसे मुसलमानों को लगता है कि ये उनके भले के लिए नहीं हैं।

सो उस मस्जिद के बाहर बैठे बुजुर्ग मुसलमानों के साथ मैं जब बातें करने लगी, तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, जब उन्होंने कहा कि कुछ मुस्लिम नौजवान अब मजदूरी करके गुजारा करने पर मजबूर हैं, क्योंकि उनके रोजगार के साधन बंद हो चुके हैं। मुझसे कहा गया, 'मुसलमान अक्सर चमड़ा उद्योगों में या गोश्त की दुकानों और बूचड़खानों में काम करते थे या फिर पशु पालते थे। पर नाजायज उद्योगों को बंद करने के बहाने ये सब काम काफी हद तक बंद कर दिए गए हैं।'

मैंने जब उनसे पूछा कि क्या मुसलमानों को अब लगता कि नरेंद्र मोदी का 'सबका साथ, सबका विकास' वाला वादा सिर्फ जुमला था, तो सबने निस्संकोच स्वीकार किया कि ऐसा ही है। योगी आदित्यनाथ ने हाल में गर्व से कहा था कि भाजपा की सरकार बनने के बाद उत्तर प्रदेश में एक भी दंगा नहीं हुआ है। दंगे नहीं हुए हैं, यह बात सच है, लेकिन यह भी सच है कि मुसलमानों में आजकल एक गहरी मायूसी दिखती है। मायूसी का कारण केवल नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता नहीं है। मायूसी इसलिए भी है, क्योंकि जो मुसलमान कांग्रेस की बांहों में सुरक्षा महसूस करते थे, उनको अब दिखने लग गया है कि कांग्रेस की धर्मनिरपेक्षता खोटी है। सो यह कहना गलत न होगा कि उत्तर प्रदेश में मुसलमानों के वोट मायावती और अखिलेश की पार्टियों को जाएंगे।

मैंने जब इन बुजुर्गों से पूछा कि क्या प्रियंका गांधी के आने से कांग्रेस की स्थिति पहले से अच्छी हो गई है, तो उन्होंने कहा कि अभी तक तो ऐसा नहीं लगता, क्योंकि कांग्रेस जमीन पर नहीं दिखती है। जब संस्था ही नहीं रही, तो प्रियंका गांधी क्या कर सकेंगी?

जिस दिन मेरी उन बुजुर्ग मुस्लिमों के साथ बातें हो रही थीं, उसी दिन प्रियंका गांधी के लोगों ने बताया कि वह उत्तर प्रदेश के दौरे पर अयोध्या आने वाली हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश के अपने पहले दौरे में कांग्रेस अध्यक्ष की बहन प्रियंका गांधी गंगा जी के रास्ते वाराणसी गई थीं, जहां उनके हाथों में आरती की थाली दिखी। मुसलमानों की नजरों में साफ जाहिर हो गया है कि राहुल गांधी की कांग्रेस अब वह कांग्रेस नहीं रही है, जो कभी अपने आपको सेक्यूलरिज्म की ठेकेदार मानती थी। सो कैसे सुरक्षित रहेगा वह मुस्लिम वोट बैंक, जिसके होते कांग्रेस उत्तर प्रदेश में कभी हारती नहीं थी? उसका वोट बैंक अब बिखर-सा गया है।

उत्तर प्रदेश के इस दौरे पर अगर कोई चीज मुझे बिल्कुल स्पष्ट दिखी, तो सिर्फ यह कि मुसलमानों का वोट इस बार भाजपा को किसी भी हालत में नहीं जाएगा। पिछले लोकसभा चुनाव में काफी हद तक मुसलमानों ने मोदी को वोट किया था, वर्ना भाजपा को इस राज्य की अस्सी में से इकहत्तर सीटें कभी न मिलतीं। इस बार ऐसा नहीं होने वाला, यह पूरी तरह स्पष्ट है।

हरियाली और रास्ता

सुहास, चॉकलेट और लालच

एक ऐसे बच्चे की कहानी, जो चॉकलेट के लालच में पूरी फैक्टरी घूम गया।

कक्षा में मास्टर साहब छात्रों से कह रहे थे, लालच बुरी बला है। लालच से बचना चाहिए। सुहास बोला, पर मास्टर जी, हम तो बच्चे हैं। इस उम्र में बच्चे थोड़े-बहुत लालची होते ही हैं। मास्टर जी बोले, लालच की कोई उम्र नहीं होती, सुहास। लालची आदमी हमेशा लालची ही रहता है। सुहास बोला, फिर हम लालच कैसे कम कर सकते हैं? मास्टर जी बोले, एक काम करो। पास में चॉकलेट की एक फैक्टरी है। वहां जाओ और जो चॉकलेट तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद हो, वह ले आओ। चॉकलेट के पैसे मैं दूंगा। पर शर्त यह है कि तुम एक ही चॉकलेट उठा सकते हो और एक बार आगे बढ़ गए, तो पीछे नहीं जा सकते। यह सुनकर सुहास भागता हुआ चॉकलेट की फैक्टरी में पहुंचा और गेट पर मास्टर जी का नाम बताकर अंदर चला गया। वहां एक से बढ़कर एक चॉकलेट रखी हुई थी। घुसते ही पहले उसे लॉलीपॉप दिखी। सुहास ने सोचा, यह तो मैं रोज खाता हूं, आज कुछ नया देखता हूं। आगे उसे एक मिल्की बार दिखी। उसने सोचा, है तो यह अच्छी, पर क्या पता, आगे और भी अच्छी चॉकलेट हों। आगे उसे कुछ नई तरह की चॉकलेट दिखाई दी। पर अपने मन को समझाकर वह आगे बढ़ गया। आगे बढ़ते-बढ़ते वह फैक्टरी के अंतिम द्वार पर पहुंच गया। सारी अच्छी चॉकलेटें पीछे रह गईं और उसके हाथ कुछ भी न लग पाया। वह मायूस होकर अपने क्लास पहुंचा। मास्टर जी ने पूछा, कौन-सी चॉकलेट ली? सुहास बोला, मास्टर जी, आगे और भी अच्छी चॉकलेट मिल जाए, इस चक्कर में मैं फैक्टरी के अंतिम दरवाजे पर पहुंच गया। मास्टर जी बोले, बेटा, इसी को लालच कहते हैं। जो हमारे सामने होता है, हम उसे यह कहकर अनदेखा कर देते हैं कि मेरे लिए तो इससे बड़ा कुछ नियत है।

अक्सर बेहतर पाने के लालच में हम वह भी खो देते हैं, जो हमारे सामने होता है।

मंजिलें और भी हैं

>> तुषार कांजीलाल

सुंदरवन में विकास के साथ पर्यावरण का भी ध्यान रखा

मैं पश्चिम बंगाल का हूं और रवींद्रनाथ से बेहद प्रभावित हूं। ज्यादातर लोग रवींद्रनाथ की कविताओं, कला और संगीत की चर्चा करते हैं। वे इस तथ्य की अनदेखी कर देते हैं कि शांतिनिकेतन की स्थापना करने के दौरान उन्होंने पास के तीन गांव गोद लिए थे और उन्हें श्रीनिकेतन नाम दिया था। मैं एक घुमक्कड़ हूं। मैंने देश को पूरी तरह जानने के लिए कई बार भ्रमण किया। उसी दौरान मेरे दिमाग में एक पिछड़े गांव को गोद लेकर उसका विकास करने का आइडिया आया। सुंदरवन के एक द्वीप में मुझे रांगाबालिया नाम का एक ऐसा ही अत्यंत पिछड़ा गांव मिला। कुछ दशक पहले जब मैं इस गांव में पहुंचा, तो वहां न तो पक्की सड़क थी, न ही पेयजल की कोई व्यवस्था। उस गांव तक पहुंचने के लिए पैदल ही जाना पड़ता था। स्कूल या चिकित्सा सुविधा की तो खैर वहां उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। उस गांव का विकास करने के लिए मैंने सुंदरवन में ही बस जाने का फैसला किया।

सबसे पहले मुझे उस गांव के लोगों का भरोसा जीतना था, क्योंकि मैं उनके लिए बाहरी आदमी था। मैंने सड़क निर्माण और पेयजल की व्यवस्था के साथ साफ-सफाई के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए सबसे पहले गांव के लोगों के साथ एक बैठक की। जब लोगों ने लगातार उनके गांव की बेहतरी के लिए मुझे काम करते देखा, तो वे मुझ पर भरोसा करने लगे। लेकिन वहां विकास के लिए कदम उठाना भी चुनौती से कम नहीं था, क्योंकि सुंदरवन में विकास का मॉडल वही नहीं हो सकता था, जो देश के दूसरे इलाके में है। इसलिए हमने कच्ची सड़क को ही विकसित रूप दिया, उसके दोनों ओर पौधरोपण हुआ। उसके बाद प्रशासन के सहयोग से पेयजल, स्कूल और स्वास्थ्य सुविधाओं की शुरुआत वहां की गई, हालांकि इसमें बहुत समय लगा।

मैंने कृषि विशेषज्ञों को भी बुलाया, जिन्होंने किसानों को खेती के तरीके के बारे में विस्तार से समझाया।

मैंने वहां के किसानों को खेती में भी परंपरा का पालन करने के लिए कहा, क्योंकि सुंदरवन की दलदली जमीन में आप आधुनिकता और तकनीक के इस्तेमाल के बारे में सोच नहीं सकते। जहां कच्चे घरों के लंबे समय तक टिके रहने की संभावना नहीं होती, वहां खेती में फूंक-फूंककर कदम उठाने की जरूरत तो है ही, पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ खेती पर भी जोर देने की आवश्यकता है। जैसे दूसरे क्षेत्रों में, वैसे ही खेती में भी लोगों ने मेरे सुझावों पर अमल किया। मैंने अपने अभियान के तहत कई बार कृषि विशेषज्ञों को भी बुलाया, जिन्होंने किसानों को खेती के तरीके के बारे में विस्तार से समझाया। अच्छी बात यह है कि सरकार और प्रशासन ने सुंदरवन में टिकाऊ विकास की दिशा में किए गए मेरे काम का महत्व समझा। हालांकि कई बार सरकार का सहयोग मुझे समय पर नहीं मिला। लेकिन इससे विकास कार्यों की दिशा नहीं रुकी। मैंने खुद काम करने के अलावा स्थानीय लोगों का समूह भी बनाया, जो लगातार मेरे काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

आज मैं खुद अस्सी साल का हूं। पिछले बावन साल में मैंने सुंदरवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। मैं कह नहीं सकता कि अगले पचास साल में सुंदरवन का स्वरूप क्या होगा। लेकिन मुझे इस बात का संतोष जरूर है कि मैंने अपनी क्षमता के अनुरूप काम किया है। मैंने न केवल स्थानीय लोगों को टिकाऊ विकास के बारे में बताया है, जिसमें मनुष्य के साथ-साथ रॉयल बेंगॉल टाइगर का होना भी जरूरी है, बल्कि बाहर के लोगों और संस्थाओं को भी सुंदरवन के मौजूदा स्वरूप को बनाए रखने के लिए मदद करने के लिए कहा है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

खुली खिड़की

प्रति व्यक्ति जीडीपी (पीपीपी) वृद्धि

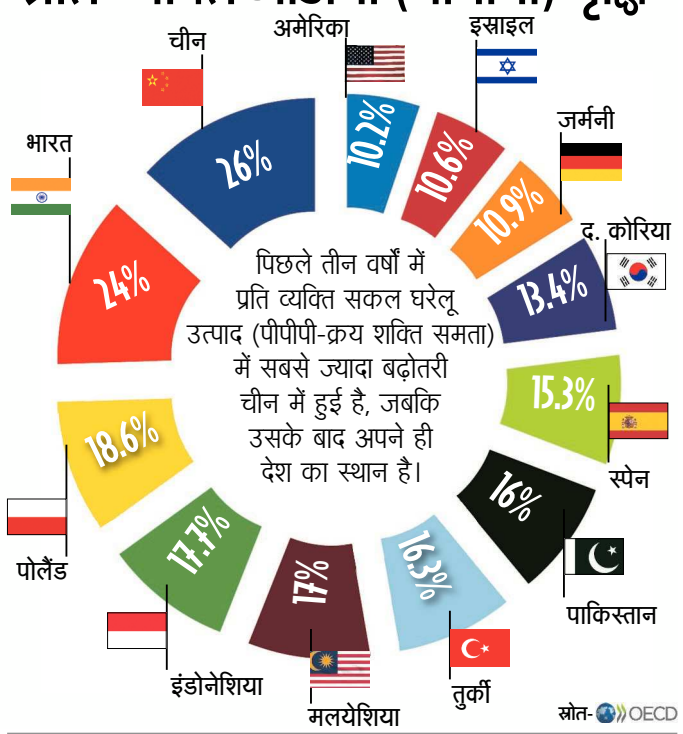

पूर्ण समर्पण ही भक्ति

सत्संग

रामकृष्ण परमहंस अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए अवसर की महत्ता के बारे में बता रहे थे। वह कह रहे थे कि मनुष्य अक्सर अपने जीवन में आए सुअवसरों को ज्ञान और साहस की कमी के कारण खो देता है। अज्ञान के कारण मनुष्य या तो अवसर को समझ नहीं पाता, और समझ में आ भी जाए, तो उसका लाभ उठाने का साहस उनमें नहीं होता। जब उन्होंने देखा कि उनकी बात उनके शिष्यों की समझ में नहीं आ रही, तो उन्होंने सामने ही बैठे अपने प्रिय शिष्य नरेंद्र से कहा, नरेंद्र, मान ले कि तू एक मक्खी है और तेरे सामने अमृत का कटोरा भरा पड़ा है। अब बता कि तू उसमें कूद पड़ेगा या किनारे बैठकर उसे छूने की कोशिश करेगा? नरेंद्र बोला, मैं किनारे बैठकर ही उसे छूने की कोशिश करूंगा। बीच में कूद पड़ा, तो मेरे प्राण संकट में पड़ सकते हैं। इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि किनारे बैठकर अमृत पान की कोशिश की जाए। पीछे बैठे नरेंद्र के साथियों ने उसके तर्क की खूब सराहना की।

लेकिन रामकृष्ण परमहंस हंसते हुए बोले, मूर्ख, जिस अमृत को पीकर तू अमर होने की कल्पना करता है, उसमें भी डूबने से डरता है! जब अमृत में डूबने का सुअवसर मिल रहा है, तो फिर मृत्यु का भय क्यों? अब शिष्यों को बात समझ में आ गई। चाहे आध्यात्मिक उन्नति हो या भौतिक, जब तक पूर्ण समर्पण नहीं होता, तब तक सफलता संदिग्ध है।

-संकलित